**DR. RANJEET KUMAR**
**Dept. Of History**
**H. D. Jain College Ara**
**M.A , sem.- 2, CC-7, unit-5**

## चम्पारण सत्याग्रह

चम्पारण सत्याग्रह आधुनिक भारतीय इतिहास में पहली बार ऐसी सत्याग्रह क्रांति थी जिसे मोहनदास करमचंद गांधी ने ब्रिटिश भारत में 1917 में नेतृत्व किया। यह न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रमुख विरोध था बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा देने वाला महत्वपूर्ण मोड़ भी था। यह आंदोलन खास तौर पर किसानों के हित और उनके शोषण के विरुद्ध चलता हुआ ब्रिटिश शासकों के सामने एक शांतिपूर्ण संघर्ष के रूप में उभरा।

चम्पारण (अब बिहार के पश्चिम चम्पारण और पूर्व चम्पारण जिले) उस समय कृषि प्रधान इलाका था जहां ज्यादातर किसान का जीवन खेती पर निर्भर था। वहाँ की एक खास फसल थी नील (Indigo), जिसका रंग निकालकर दुग्ध उत्पादन और वैश्विक बाजारों में बड़े पैमाने पर व्यापार होता था। ब्रिटिश शासन और यूरोपीय फैक्टर्स ने किसानों को इस नील की खेती पर मजबूर कर रखा था, जो उनके जीवन को अत्यधिक कठिनता और शोषण के दौर में डाल रहा था।

चम्पारण सत्याग्रह 10 अप्रैल 1917 के आसपास शुरू हुआ और आसपास के कई महीनों तक चला। इसे ब्रिटिश भारत में गांधीजी का पहला वास्तविक सत्याग्रह आंदोलन माना जाता है जिसमें उन्होंने सविनय अवज्ञा और शांतिपूर्ण प्रतिरोध की नीति अपनाई।

### 1. चम्पारण की पृष्ठभूमि

#### 1.1 भूगोल और समाज

चम्पारण उस समय एक पिछड़ा और कृषि प्रधान इलाका था। लोगों की अधिकतर उपजीविका खेती से थी और सामाजिक जीवन भी गांवों के आसपास ही आधारित था। यहाँ के किसान बड़े ज़मीनदार नहीं थे। वे भूमिहीन या छोटे सीमांत किसान थे, जिनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे। इस कारण, वे बाहरी दबावों के सामने बचाव की हालत में थे।

#### 1.2 नील (Indigo) का महत्व

नील एक रंजक फसल थी जिसके पत्तों से नीले रंग का प्राकृतिक डाई मिलता था। 19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में यह एक महत्वपूर्ण निर्यात वस्तु बन चुकी थी। ब्रिटिश भारत के कॉमर्शियल किसानों और अंग्रेज़ फैक्टर्स के लिए नील की डिमांड काफी महत्वपूर्ण थी, क्योंकि इससे प्राप्त होने वाला धागा और रंगीन कपड़ा विश्व बाजार में अच्छी कीमत पर बिकता था।

#### 1.3 टिक्काथिया (Tinkathia) प्रणाली

चम्पारण आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि थी टिक्काथिया प्रणाली। इसके अंतर्गत किसानों को अपनी ज़मीन के लगभग 3/20 हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य कर दिया गया। यह कोई औपचारिक सरकार की नीति नहीं थी बल्कि अंग्रेज़ नील फ़ैक्ट्री मालिकों के दबाव में लागू किया गया एक ज़ोर जबरदस्ती वाला नियम था। इससे किसानों की खाद्य फसलों के लिए ज़मीन कम बचती थी और उन्हें आर्थिक रूप से बहुत नुक़सान उठाना पड़ता था।

2. आंदोलन का कारण

2.1 किसानों पर अत्याचार

नील की खेती मजबूरी के कारण किसानों को अपने खेतों में पर्याप्त अन्न फसल उगाने का अवसर नहीं मिलता था। यह प्रणाली किसानों की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ रही थी और कृषि संसाधनों को स्थायी रूप से नुकसान पहुँचाती थी। वे भूखे और कर्जदार हो गए।

2.2 अनुचित आर्थिक व्यवस्था

नील की मांग कम होने पर भी किसानों को मजबूर रूप से उसकी खेती के लिए बाध्य किया जाना, भारी कर और ब्याज दर पर कर्ज देना, किसानों को बन्धुआ मजदूर जैसा जीवन देना—इस सबने किसानों के जीवन को और कठिन बना दिया।

2.3 गिरती बाजार कीमतें

20वीं सदी की शुरुआत में जर्मन तकनीक द्वारा कृत्रिम रंगों का अविष्कार हुआ, जिससे प्राकृतिक नील की मांग गिर गई। इससे नील निर्यात की कमाई घट गई और किसान और फैक्ट्री मालिक दोनों को नुक़सान उठाना पड़ा। इस स्थिति में ब्रिटिश फैक्ट्री मालिक किसानों से कर्ज वसूलने के लिए ज़ोर जबरदस्ती करने लगे।

2.4 किसानों का असंतोष

इन शोषणकारी नीतियों के कारण किसान मानसिक और आर्थिक रूप से दबाव में थे। वे अपनी स्थिति से नाख़ुश और निराश थे। दबाव इतना बढ़ा कि किसान न्याय पाने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने को बाध्य हो गए।

3. गांधीजी का चम्पारण आगमन

3.1 राजकुमार शुक्ल की भूमिका

एक स्थानीय किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गांधीजी को चम्पारण आने के लिए लगातार आमंत्रित किया। उन्होंने गांधीजी को किसानों की दुर्दशा के बारे में बताया, और गांधीजी ने इस समस्या को स्वयं समझने और देखने का निर्णय लिया।

3.2 गांधीजी का भारत लौटना

1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के बाद गांधीजी ने भारतीय किसानों के शोषण की खबरें सुनी थीं। इसीलिए जब उन्हें चम्पारण से आग्रह मिला, तो वे इस मामले में हस्तक्षेप करने के लिए तैयार हो गए।

3.3 चम्पारण की ओर यात्रा

गांधीजी ने 10-11 अप्रैल 1917 की रात मुज़फ़्फरपुर में ठहरने के बाद चम्पारण का रुख़ किया। वहाँ पहुंचकर उन्होंने जमीन पर किसानों की स्थिति को समझने के लिए गांव-गांव जाकर लोगों से मुलाक़ात की। उन्होंने खेतों का दौरा किया, किसानों के परिवारों से कहा और स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन किया।

4. सत्याग्रह की शुरुआत

4.1 शांतिपूर्ण प्रतिरोध

गांधीजी ने ब्रिटिश प्रशासन और नील फ़ैक्ट्री मालिकों के सामने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत का प्रयोग किया। वे किसानों की ओर से न्याय की माँग कर रहे थे, पर किसी भी प्रकार की हिंसा का समर्थन नहीं कर रहे थे। यही सत्याग्रह का मूल संदेश था।

4.2 सरकारी आदेश का विरोध

जब ब्रिटिश अधिकारियों ने गांधीजी को चम्पारण से वापस जाने का आदेश दिया, तो उन्होंने इसका पालन नहीं किया। उन्होंने शांतिपूर्ण ढंग से प्रतिरोध किया और इसके लिए खुद को तैयार किया कि यदि ज़रूरत पड़ी तो उन्हें सज़ा दी जाए। यह गांधीजी के जीवन में पहला सविनय अवज्ञा का अनुभव था।

4.3 किसान समर्थन और संयुक्त संघर्ष

गांधीजी के साथ बड़ी संख्या में स्थानीय किसान और ग्रामीण एकत्र होने लगे। लोगों को पहली बार लगा कि उनके हक़ में कोई आवाज़ उठ रही है और वे अकेले नहीं थे। किसानों की भागीदारी से आंदोलन को मजबूती मिली और ब्रिटिश प्रशासन पर दबाव बढ़ा।

5. सत्याग्रह के प्रमुख चरण

5.1 गाँवों का दौरा और निरीक्षण

गांधीजी ने सतवरिया, लौकरिया, सिंगाछापर, भितहा, मुरली, भरहवा, पीपरा, भितिहरवा, साठी, नरकटियागंज, शिकारपुर, सरिसवा जैसे क्षेत्रों का दौरा किया। उन्होंने ग्रामीणों से मिलकर उनकी समस्याएँ सुनीं और आत्मीयता से समझा।

5.2 सत्याग्रह की रणनीति

गांधीजी ने किसानों को सिखाया कि वे शांतिपूर्ण तरीके से अपने हक़ की माँग करेंगे, जिससे ब्रिटिश शासन की कठोरता और अन्याय स्पष्ट हो सके। उन्होंने मनाया कि अहिंसा ही सबसे शक्तिशाली तरीका है।

5.3 सरकारी आयोग का गठन

बाद में प्रशासन ने एक सरकारी आयोग बनाया जिसमें गांधीजी को भी शामिल किया गया। गांधीजी ने किसानों की बात को इस आयोग के सामने रखा। आयोग ने किसान-फ़ैक्ट्री मालिकों के बीच स्थिति की जांच की और अंत में एक समझौता प्रस्ताव पर काम शुरू हुआ।

6. आंदोलन का परिणाम

6.1 टिक्काथिया का समाप्ति

गांधीजी और किसानों की लगातार लड़ाई और सत्याग्रह के बाद ब्रिटिश प्रशासन और नील फ़ैक्ट्री मालिकों को टिक्काथिया प्रणाली को समाप्त करने पर मजबूर होना पड़ा। यह पांच वर्षों से अधिक समय तक चला शोषणकारी नियम किसानों के लिए अब लागू नहीं रहा।

6.2 धन की वसूली और राहत

तत्कालीन फ़ैक्ट्री मालिकों को किसानों से गलत तरीके से वसूले गए धन का 25 प्रतिशत वापस भुगतान करना पड़ा। इससे किसानों को आर्थिक राहत मिली और वे अपने जीवन को पुनः स्थिर करने में सक्षम हुए।

6.3 आंदोलन की जीत

चम्पारण सत्याग्रह किसानों की पहली बड़ी जीत थी, जिसमें ब्रिटिश शासन को बातचीत और समझौते के लिए मजबूर होना पड़ा। इसने भारतीय जनता में विश्वास और उम्मीद जगाई।

7. आंदोलन का सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव

7.1 गांधीजी की लोकप्रियता

चम्पारण सत्याग्रह के बाद गांधीजी को देश में व्यापक पहचान मिली और वे स्वतंत्रता संघर्ष के अग्रणी नेता बन गए। इस आंदोलन ने उन्हें "महात्मा" के रूप में पहचाना जाने का मार्ग खोल दिया।

7.2 किसानों का सशक्तिकरण

यह आंदोलन किसानों को बताता है कि वे भी संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। सत्याग्रह ने भारतीय किसानों को शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाने की ताकत दी।

7.3 स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा

चम्पारण सत्याग्रह ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को एक नई रणनीति दी: अहिंसा पर आधारित नागरिक प्रतिरोध। यह बाद में खेड़ा सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसी प्रमुख आंदोलनों की नींव बन गया।

8. चम्पारण सत्याग्रह का लंबे समय तक प्रभाव

8.1 भारतीय राजनीति की नींव

यह सत्याग्रह भारतीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना बन गया। इसके परिणाम स्वरूप भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में किसान, मजदूर और आम जनता को शामिल करने की नींव पड़ी।

8.2 शिक्षा और समाज सुधार

गांधीजी ने आंदोलन के दौरान देखा कि सामाजिक कुरीतियाँ और अशिक्षा भी किसानों की स्थिति को बिगाड़ रहे थे। अतः आंदोलन के बाद उन्होंने शिक्षा और सामाजिक सुधार पर भी ध्यान देना शुरू किया।

8.3 वैश्विक प्रभाव

चम्पारण सत्याग्रह के तरीके और सिद्धांत बाद में विदेशों के नागरिक अधिकार आंदोलनों को भी प्रेरित कर गए, जैसे अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर के आंदोलन। भले ही यह भारत के भीतर हो, लेकिन सत्याग्रह के सिद्धांत का प्रभाव दुनिया भर में महसूस किया गया।

9. स्मृति और आधुनिक यादें

9.1 शताब्दी समारोह

1917 से 100 साल बाद 2017 में चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी समारोह मनाए गए। इस दौरान राष्ट्रीय विमर्श, सम्मेलनों और कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, ताकि गांधीजी के विचारों और सत्याग्रह के महत्व को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके।

9.2 संग्रहालय और धरोहर

आज चम्पारण के कई स्थानों पर संग्रहालय और स्मारक स्थापित किए गए हैं जो इस आंदोलन की याद दिलाते हैं। इससे आज भी लोग उस संघर्ष और शारीरिक, मानसिक मेहनत को समझते हैं जो किसानों और गांधीजी ने अनुभव की थी।

10. निष्कर्ष

चम्पारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की बिना में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह पहला उदाहरण था जिसमें गांधीजी ने अहिंसा, सत्याग्रह और शांतिपूर्ण प्रतिरोध की नीति को प्रभावी रूप से लागू किया। इस आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य किसानों के अधिकारों की रक्षा और शोषण से मुक्त करना था, जो सफल रहा। इसके परिणामों ने भारतीय जनता को अंग्रेज़ो के खिलाफ एकजुट किया और स्वतंत्रता संघर्ष को एक नया रूप दिया। इस आंदोलन की रणनीति, उद्देश्य और सफल परिणाम आज भी इतिहास में एक प्रेरणास्पद अध्याय के रूप में पढ़े और सराहा जाते हैं।